खोंइछा

(भोजपुरी पत्रिका)

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

नेह भरल गोदी के पावल, ई हमार भासा भोजपुरी।
फइलाइब हम देस-देस में, जइसे मधुर गंध कस्तुरी॥

भोजपुरी अनुसंधान संस्थान
अनाईठ, आरा, भोजपुर (बिहार)

अंक - 16 4/- जून 2006

प्रकासक :-
भोजपुरी अनुसंधान संस्थान
मुहल्ला + डाकघर - अनाईठ (आरा) (प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)
जिला - भोजपुर (बिहार) 802301

संरक्षक
डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
डॉ० गदाधर सिंह
डॉ० अमर सिंह
डॉ० रमाशंकर आर्य

❖

सम्पादक
डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा

❖

मुद्रक
सपना प्रिंटिंग प्रेस
शीतल टोला, आरा

❖

सहयोग
चार रूपिया

एह अंक में -

सम्पादकीय	03
रचनाकार	
वीरेन्द्र भोजपुरी	02
शशिभूषण मिश्र	03
भोला	03
कृष्ण देव चतुर्वेदी	04
उमेश कुमार पाठक 'रवि'	04
बरमेश्वर सिंह	04
बाबू राम सिंह 'कवि'	04
डॉ० राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी	05
डॉ० स्वर्णकिरण	05
शशिकान्त ओझा	05
विद्याशंकर 'विद्यार्थी'	05
शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'	06
लव शर्मा 'प्रशांत'	08
सुशील कुमार शर्मा	11
धर्मेन्द्र कुमार पंडित	14
तेज नारायण सिंह 'तरूण'	14
डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा	14,15,16

गज़ल

— वीरेन्द्र भोजपुरी

अखबार जिन्दगी के बांचल करींले हम,
दूरी दिल में दिल्ली के नापल करींले हम।
कूबर भइल जवानी जांगर खटाई के,
तबहूं पेट पीठ में साटल करींले हम।
नथिया धराइल बन्हकी खरची कीने बदे,
औकात सूदी-किस्ती में आंकल करींले हम।
बथानी से बेलवलऽ कि हई हम अनेरिया,
लउर के डरे दियरा में मांकल करींले हम।
आस्वासन का सूली लटकल हक्कूक के कहानी,
असरे में आन्हर अँखिया से ताकल करींले हम।
हँसल जे देखले 'भोजपुरी' त झट कइले तलब,
तेवर जे देखनीं उनुकर त हाँफल करींले हम।

●

[सम्पर्क : सोनघट्टा, भोजपुर, बिहार]

पत्रिका में व्यक्त विचारन खातिर खुद रचनाकार जिम्मेवार बाड़न, सम्पादक भा प्रकासक ना

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

कहल जाला पुरनके चाउर पंथ परेला। कुछ एही हाल बा 'खोंइछा' के एह अंक के। आजु-काल्हु छोट-छोट पत्र पत्रिकन के जवन दौर से गुजरे के पड़ि रहल बा ओह दौर में कतनन के अकाल मउवत हो जात बा त कुछ के धुकधुकी चलि रहल बा। हिन्दी के बहुत बढ़िया-बढ़िया पत्र-पत्रिकन के अकाल मउवत हो गइल त भोजपुरी के, के पूछो? भोजपुरी के ना जाने अबहीं तक कतने पत्र-पत्रिका निकलल आ कतने के मउवत हो गइल। कुछ के धुकधुकी चलत बा। जवनन के धुकधुकी चलत बा उन्हनीं के नांव गिनावल उचित ना होई तबो खुसी एह बाति के जरूर बा कि अबहीं उन्हनीं के कम से कम सांस त चलि रहल बा। अंग्रेजी में कहावत ह- 'Something is better than nothing.' एह से 'ना' से त बढ़िया कम से कम 'हँ' बा।

'खोंइछो' जवन उमेद आ भरोसा से निकाले के चालू कइल गइल रहे ऊ उमेद आ भरोसा कायम ना रहि पाइल। नतीजा ई बा कि एकर अंक समय प नइखे निकलि पावत। तबो हम एह उमेद का साथे रउआ सभे अस सुधी पाठकन के बीचे एकरा के परोस रहल बानीं कि देर चाहे सबेर एकर अंक पुरनका रूप भा कबो-कबो नयापन लेले आवत रही।

रउआ सभे से हम अतने उमेद करत बानीं कि आपन नेह-छोह बनवले राखब आ कवनो किसिम के दुराव पत्रिका भा सम्पादक के प्रति अपना मन में मत ले आइब। कुछ लोग हमरा के आपन नेक सलाह देले रहे कि पत्रिका समय से नइखे निकलत त एकरा के बन्द क दीहीं। हम उनुका लोग के प्रति आभार प्रकट करत अतने कहब कि जब रउआ सभे के हाथ में एकर जिनिगी नइखे त एकरा के मउवत के असीरवाद त मत दीं। हम ओह लोग के दिल से आभारी बानीं जे हमरा के आपन रचनात्मक सहयोग पत्रिका खातिर देबे में कबो ओज ना कइल। रउआ सभे के प्रेम आ सहयोग के उमेद में.....

— सम्पादक

कविता

बिचार करीं

— शशिभूषण मिश्र

आईं, थोड़े सा प्यार करीं
परिवार समाज के साथे ले के।
मन के भरम सब दूर करके
आईं, बइठ के बात करीं।।

पल-दू-पल त साथ रहीं
झगड़ा-झंझट से बात बनी ना।
मनमुटाव से काम चली ना
मिल-जुल के सद् बेवहार करीं।।

बात बढ़वला से बात बढ़ी
एकरा से मत इनकार करीं।
हम बदलब त जग बदली
आईं, साथे हम बिचार करीं।।

●

[सम्पर्क : अनाईठ मठिया, आरा]

कविता

होली

— भोला

एक ओरे नारी के जरावल जाता,
दोसरा ओरे नारी से मउज-मस्ती मनावल जाता,
हमरा ना कतहीं प्रेम जनाता,
तबो होली प्रेम के तेवहार कहाता,
लोग नसा में मनावऽता
दसा देखत बानीं
सभसे नीच, सभसे ऊँच के
होली तेवहार ह,
ना जाने कइसन आ केकर पेयार ह?
एक ओरे .....।

× × × ×

आइल समय अनोखा बा,
ना बूझबऽ त धोखा बा,
बूझि जइबऽ त मोका बा,
ना बूझी से धोका बा।

●

[सम्पर्क : भवादा थाना के पास, आरा]

www.bhojpurisahityangan.com

कविता
निर्मल हाथ
— कृष्णदेव चतुर्वेदी

जीवन रथ के हाँके हाथ।
गढ़े मूर्ति तत्पर हाथ।
किंकरता से मुक्ति पावे,
मेहनत कर इंसानी हाथ।
गमके बगिया सजे घर,
दिन-रात परिश्रम करे हाथ।
झकझोरि जगावे सूतल मन,
मलय पवन ह निर्मल हाथ।
प्रहरी ह सीमा के चौकस,
इतिहास में लउके श्रम के हाथ।
जब जागे, तब आगे हाथ,
प्रात-दुपहरी संध्या हाथ।
'कृष्णदेव' गांधी के पढ़ि लऽ
सेवक बनि सेवा में हाथ।

●

[सम्पर्क : म॰ न॰ 522, बंगाली मोहल्ला
पंचशील नगर-भोपाल (म॰ प्र॰), पिन-
462003]

लोग कहेला भोजपुरी हिन्दी के बिन्दिया ह,
लोग ना जाने कि भोजुपरी हिन्दी के दिदिया ह।
—दिनेश

गजल
— उमेश कुमार पाठक 'रवि'

प्रीत मौसम के अब केहू गाई ना जी।
प्रीत के किरिया अब केहू खाई ना जी।
घरते झांपी बवंडर भइल आजु बा,
ई अफतिया अब ढोवले ढोवाई ना जी।
हियरा केहू तराजू रखी नाहीं अब,
बाति रहता के केहू ठठाई ना जी।
मन के ऐना फूटल बा टूटल आदमी,
आगि लगला पर केहू बुताई ना जी।
सउँसे बस्ती में गस्ती करे चोर अब,
किरिन डूबल दरवाजा खोलाई ना जी।
होली आओ ना जाउ मांगि धुइयाँ ठठल,
विजयी हरनाकुस केहू घघाई ना जी।
मडर हरन डकइती से मरघट वतन,
'रवि' खुद ठठी केहू बचाई ना जी।

●

[सम्पर्क : कुसुरूपा, सरेंजा, चौसा, बक्सर
(बिहार) 802114]

जेकरा माई से न्हइखे प्रेम, ऊ चाची, मउसी से का करी?
जेकरा मावे पगड़ी कारहे लउर, ऊ बन्दूक से का डरी?
—दिनेश

दोहा
— बरमेश्वर सिंह

जाति लिंग के भेद तजि, पड़ीं पुरनिया पाँय।
अउरी कतहीं ना हवे, अइसन सीतल छाँव 1 ।
कुछ सुनल कुछ मन गढ़ल, कुछ घटाव कुछ जोड़।
मेन मनला के बात हम, बानी कहले थोड़। 2 ।
हाड़ मांस के हम हईं, रउवे लेखा खास।
ए से हमरा से रवाँ, अधिक करीं जनि आस। 3 ।
केहू अपना पांव के, पहिले तूड़ी छान।
तबहीं ओकर बन सकी, धरती पर पहचान। 4 ।
बल बनि निरबल के सदा, सज्जन छोड़सु लीक।
ई जिनिगी के समर में, धरम हवे ई मीक। 5 ।
लिलबंदर बा हो गइल, पढ़-लिख नवही आज।
करनी बा सरकार के, कँहरत हवे समाज। 6 ।
तगड़ा हवे जवान जो, मत दीं ओके भीख
बा देवे के दीं भले, करम करे के सीख। 7 ।
भ्रस्ट बदे आ भ्रस्ट से, हवे भ्रस्ट के राज।
ता के माथे बा धइल, लोकतंत्र के ताज। 8 ।
हमनी के करतूत से, भइल प्रकृति बेहाल।
लहर सुनामी गांव से, आइल बनि के काल। 9 ।
ना सुधरी जब आदमी, ना छोड़ी ऊ छाव।
बरबस आगे मिलत रही, लहर सुनामी घाव। 10 ।
नारी पहुँचल रैंप पर, तूड़ि सरम के मेह।
वस्तु भइल बाजार के, अब नारी के देह। 11 ।
समाचार हम का लिखीं, बिगड़ल ए से जेड।
सहकल-बहकल गोड़ आ, पगलाइल बा हेड। 12 ।

●

[सम्पर्क : ग्राम+पो - धनडीहा, जिला-भोजपुर]

भजन
— बाबूराम सिंह 'कवि'

भाव भक्ति में लथपथ जे भगवान की,
ओकर नइया किनारे कबो जइबे करी।
करम-धरम नीमन जेकर दुनिया में बा,
ऊ त बैकुन्ठ के सुखवा पइबे करी।
जे ना अन्दर से जागल जगत में भूलल,
हाथ मलि-मलि के ऊ पछतइबे करी।
आपन नीयत-नजर जे बिगाड़ी इहाँ,
उहाँ जाके नरक गोता खइबे करी।
घोर के ओर जे ना बढ़ाई कदम,
धन-धरम ओकर रात में खिलइबे करी।
पी जहर जे अधर मुस्कुरावत रही,
नाम-यस ऊ जगत में कमइबे करी।
मद-बाउर से हटि के सटी जे सांच से,
'बाबूराम कवि' कुछ-कुछ ऊ पइबे करी।

●

[सम्पर्क : शुगर मिल, मरोली, नवसारी
(गुज0) 396436]

www.bhojpurisahityangan.com

गज़ल

— डॉ0 राज कुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी

सुगंध अतर महकावत बाड़ऽ।
गजल बहर सझुरावत बाड़ऽ॥
अंग-अंग में जादू भरल,
होस-जिगर बहकावत बाड़ऽ॥
पोर-पोर फूलन जस खिलल।
प्रेम पाँखुड़ फहरावत बाड़ऽ॥
गंध मदन रति मोहलस।
मोमी डहर दहकावत बाड़ऽ॥
नागिन लट गोर मुखड़ा सोहत।
चून झर-झर बरसावत बाड़ऽ॥

(2)

घुट-घुट के जी रहल इन्सान बा।
बरिसन से देख रहल आसमान बा॥
आसमां के जानिब सर कइसे उठे?
फन उठा के मार रहल मनिवान बा॥
कर्ज के बोझ निरंतर बढ़त गइल।
सिर आपन धुन रहल किसान बा॥
लीडर भा डीलर के सदा पौ बारह।
सरन हमेसा पावत सैतान बा॥
हर कदम पर पहरा बा धाक-धौंवद।
सुरक्छा में रह रहल धनवान बा॥
'कुमार' ई जहाँ के बात बा निराला।
भरल बाजार बिक रहल ईमान बा॥

●

[सम्पर्क : विष्णुपुरा, गुलटेनगंज, छपरा (बिहार) 841211]

ग़ज़ल

— डॉ0 स्वर्णकिरण

दुख के कहाँ बा ओर-छोर, डर लागत बा,
समय बन गइल डायनासोर, डर लागत बा।
इंसाफ के उमेद में समय बीतत जात बा
जुलुम झेंकझोरत बा पोर-पोर, डर लागत बा।
अन्हियारा रेंगनी के काँट सन पसरल जाता,
कब होखी सोनहुला भोर, डर लागत बा।
मुँह खुलत नइखे, कइसन बा आजादी
सामाजिक न्याय के झूठे सोर, डर लागत बा।
दलित मानसिकता खुल के साँस नइखे लेबे देत
साथी-सँघाती करत बाड़न बोर, डर लागत बा।

●

[सम्पर्क : पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हि0 वि0, किसान कॉलेज, सोहसराय (नालंदा)]

गज़ल

— शशिकांत ओझा

देखहीं देखे में गाँव कतना बदल गइल,
दुइए दसक में गाँव अतना बदल गइल।

बायन पेहान बन बा कहिये से गाँव में,
दरकल जमीन प्रीत के सपना बदल गइल।

अलग-थलग पड़ल बा अपने में लोग काहें,
बहकल बयार आके अंगना बदल गइल।

होली में अबकी नेह के सरबत कहाँ मिलल,
मिसिरी संउफ बेल के रसना बदल गइल।

●

[सम्पर्क : द्वारा विनोद बिहारी पाण्डेय, सिविल लाईन, साहित्य परिषद, बक्सर]

कविता

आबरू

— विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

आँखें जब लोरा गइल
त बिस्वास काहें ना घोराई
अपने जब बनि गइल कोराई
त संतोख काहे ना ओराई
भीतरे के हीरा लूटे जन
हीरा हीरा ह
दिल दिल ह
लोग लोग ह
भरोसा रहल केकर इहाँ
केहू केहू से अनमोल चीझ
काहें ना चोराई
चित कौड़ी प डीठ
का पता कब केकर लाग जाई
सब कउड़ी मिली
बाकी गइल चित कउड़ी
कहाँ जोहाई
पनहा देके
का पता
आज के थानदार हड़पिहें कि छोड़िहें
आ कि उलुटे दिहें डपट
एह से निमन बा
आँख के खोदाइल अपने सह लिहीं
आ बचा लिहीं
जतना बा ततना
आबरू।

●

[सम्पर्क : क्वाटर नं0 2, धोबी गली, पो+जिला-गिरिडीह (झारखंड) 815301]

www.bhojpurisahityangan.com

धरम के काम

— शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'

"जय हो धरमी दाता के .... जय हो। भगवान बनवले राखसु। खजाना हमेसा भरल रहे। एह भूखा लाचार भिखारी के मदद करीं। बड़ा पुन होई। भूखे अँत जरत बा।"

ऊपर के कमरा में पूजा के आसन प बइठल धरमनाथ बाबू जोर-जोर से सिव-चालीसा के पाठ करत रहन। मगर भिखारी के दीनता भरल स्वर जइसे उनुका कान में हथउड़ा के चोट करत रहे। ना चहलो प उनकर धेयान ओह आवाज प चल जात रहे। एह बाधा के कारन रहि-रहि के ऊ चालीसा के पंक्ति बीच-बीच में भूला जास। मन अनसा गइल। माथा प खीस सवार हो गइल। गुस्सा में झल्ला के किताब पटकि दीहले आ उहें से चिल्ला उठले "खदेरना, जरा नीचे देख तऽ; कवन कमबख्त अतना गला फाड़ि के चिल्ला रहल बा? हमार पूजा खरमंडिल कर देलस ससुरा! मारि के भगाव सार के दरवाजा से। एह मरदूद भिखमंगन का पाछे पूजा-पाठ, धरम-करम मोसकिल भइल बा। अदबद कैं पूजे के बेरा आ धमकिहन स। सभ साला देहचोर हवन स। काम करे के डरे भीखमंगी के धंधा करेलन स। (व्यंग से) एह टुकर खोर- कामचोर लोग के देला से भला धरम होई, पुन मिली!"

नोकर भिखारी के भगावे खातिर नीचे गइल, बाकिर ओकर दयनीय हालत देखि के ओकर (नोकर के) हिरदय पसीज गइल। गरीबे गरीब के पीरा समझेला। भिखारी जाने कई दिन के भूखल रहे। ओठ प फेफरी पड़ल रहे। पेट जइसे गड़हा में धँसि गइल रहे। हड्डी-हड्डी नजर आवत रहे। नोकर के दया आइल। पाकिट में हाथ डललस। सब्जी खरीदला का बाद दू रोपया के एगो सिक्का बचल रहे। मालिक के आदेस के अवहेलना करत, दया अउर सहानुभूति के वसीभूत होके सिक्का भिखारी के हाथ में थमा के ऊपर चलि गइल।

एने धरमनाथ बाबू सभ सामान समेटि के पूजा से उठे के उपक्रम करत रहन कि फेरू नीचे हाँकि पड़ल - "धरमनाथ बाबू.....धरमनाथ बाबू बानीं?"

पिनपिनाइल व्यंग से बोललन- "देख तऽ खदेरना, फेरू कवन हरामखोर आ पहुँचल हमरा से धरम करावे खातिर। अब पूजा-पाठ से धरम नइखे होखे के, टुकरखोर लोगन के भीख देला से, पेट भरला से धरम होई।"

खदेरन नीचे से देखिके आइल- "मालिक, अपने गाँव-घर आ महल्ला के तीन-चार आदमी हउवन। रउआ से मिलल चाहत बा लोग"।

"ठीक बा आइल बा लोग, त ले आव ऊपर। आजु के पूजा तऽ तेरहे-बाइस भइल। आजु खाली धरमे के काम करीं, धरमे कमाईं"- बात में व्यंग के चुभन स्पस्ट रूप से चोख रहे।

खदेरन के गइला के बाद धरमनाथ बाबू जल्दी-जल्दी लोग के बइठे खातिर ड्राइंग रूम के सोफा झाड़े लगले, मेज ठीक करे लगले। कुछ मिनट में खदेरन चार आदमी के लेले ड्राईंग रूप में दाखिल भइल।

"प्रनाम् धरमनाथ बाबू"- सभ एक सुर में बोल उठल। प्रनाम! प्रनाम भाई! ई दल बान्हि के कइसे-कइसे आना भइल? सवालिया नजर से सभका ओर देखत धरमनाथ बाबू बोलले।

"भाई जी, एगो धरम के काम से आइल बानीं जा"- दल में के एक आदमी मुँह खोलले।

"धरम कै काम से?"- धरमनाथ बाबू के वाक्य में एक साथ अचरज, जिग्यासा आ व्यंग के घुलल-मिलल भाव रहे।

"एगो सिवाला बनावे के जोजना बा। रावा साइत पछिलका एतवार वाला मीटिंग में ना रहीं। सउँसे गाँव के बुढ़-बुजुर्ग धरमी-करमी लोग अउर उत्साही युवा पीढ़ी के लोग जमा रहे। तय भइल कि पोखरा के किनारे एगो सिवाला के स्थापना कइल जाव। पूजा-पाठ करे खातिर, जल चढ़ावे खातिर डेढ़ माइल का दूरी प, गाँव के सिवाना प स्थित सिव-मंदिल में जाये के पड़ेला।"

बीच में बात काटत धरमनाथ बाबू हुलसि के जोड़ले "ई तऽ सचमुच में धरम के एगो महत्वपूर्न आ बड़ा जरूरी काम बा, ई जरूर होखे के चाहीं। हम एह जोजना से तन मन से सहमत बानीं।"।

"तने मन से ना, धनो से होई। असल मदद आ सहजोग ओकरे चाहीं। एक आदमी बीच में हस्तक्छेप कइलन।

"साँचि कहीं त ओकरा में हमनिंये

www.bhojpurisahityangan.com

के महल्ला के बिसेस फायदा बा। तालाब तऽ हमनिंये के महल्ला में बा। मंदिल बनला से महल्ला के रौनक आ चहल-पहल बढ़ जाई, नगीचे में पूजा-पाठ के आराम हो जाई। भिरीये भगवान के दरसन सुलभ हो जाई"- धरमनाथ बाबू के उत्साहित करे वास्ते महल्ला के शिव प्रसाद बाबू सिवाला से लाभ के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकास डललें।

"ठीक कहत बानीं शिव प्रसाद बाबू। सिवाला बनि जाई तऽ हमनीं के महल्ला के त किस्मत चमकि जाई। हम सभ तरह से तइयार बानीं। बोलीं सभे एह में हम का मदद करीं? देखीं,ओकरा के हमनीं के तय कइले बानीं जा कि धरम के एह महान कारज में जे धरमी-दानी भाई एक हजार से बेसी रकम दीहें, उनकर नाँव मंदिल के सिलापट्ट प दाता लोगन के सूची में लिखल जाई। महल्ला के सबसे प्रतिस्ठित आ धार्मिक विचार धारा के व्यक्ति रउवे बानीं। एह से रवे से बोहनी करे के बा। अब रवे अपना मन से बोलीं- कतना देबि?

यसस्वी बने के लोभ में इतराइल धरमबाबू बोललें- ठीक तऽ हम पाँच हजार दे रहल बानीं। घटी-बढ़ी त अउरी आगे मदद करबि। रावा सभे जानते बानीं हम धरम-करम के काम में हमेसा अगहर रहीलें।" अतना कहि के ऊ आवाज दीहले- "खदेरना, पेटी में से निकालि के हमार चेक बुक ले आव तऽ। सुभ काम में देर ना करे के।" जरा ठहरि के- "अच्छा, चेक केकरा नाँवे कटाई"? "शिव शंकर के नाँवे"। उहें के मंदिल के निर्मान-समिति के अध्यक्ष चुनाइल बानीं। ऊहें के नाँव से बैंक में खाता खोल दियाइल बा। चंदा के सभ रकम योही खाता में जमा होइहें स। एक बात के रावा के अउर सूचना दे रहल बानीं जा। अगिला सिव राति के स्थानीय विधायक धरमवीर यादव के हाथे एह प्रस्तावित मंदिल के सिलान्यास कार्य सम्पन्न होई। रावा से निहोरा बा कि ओह दिन जरूर आपन उपस्थिति से सभ के गौरव बढ़ाइबि।"

बिना खिंच-खिंच आ रिगिर के पाँच हजार से बोहनी भइल रहे। लोग बड़ा संतुस्ट आ उत्साहित होके चेक लिहले आपुस में हँसत-बोलत चलि गइल पर धरमनाथो बाबू कम खुस आ गरब से फूलल ना रहन। सिलापट्ट प चंदा देवे वाला लोगन का सूची में उनुकर पहिलका नाँव रही आ सबका ऊपर ..... मंदिल का साथे उनको नाँव अमर हो जाई एह से बढ़ि के अगराये आ गौरवान्वित होखे के दोसर बात का होइत! इहे खेयाल में दिन भर डूबल रहले।

दोसरका दिन हमेसा के तरह पूजा के सभ सरजाम ठीक करे ला खदेरना के हाँकि परले। पर कवनो जबाब ना मिलल। साइत खदेरना ओह घरी घर में ना रहे। कुदि के, सभ सामान अपनहीं जुटावे लगले, पर पूजा के आसनी ना मिलल। खैर, कसहूँ पूजा प बइठले आ पाठ सुरू कइले कि खदेरना हाँफत-हाँफत आके सोझा खाड़ हो गइल। धरमनाथ बाबू गरम होके बोललें " कहाँ मर गइल रहस? कई बेर हाँकि परली। आजु सभ काम अपने करे के पड़ल। पूजा वाला आसनी कवना कोनाटी में घुसिया के रखले बाड़े? खोजि के हारि गइलीं ना मिलल।"

फेर, ओकरा ओर ताकि के- "अतना हाँफत काहे बाड़े?" कहँवा से आवत बाड़े ?"

खदेरना सिहकल-सहमल बोललस- "मलिकार, हमहूँ चलि गइल रहीं देखे। बड़ा भीड़ लागल रहे ऊहाँ।

उत्सुकता से- "कहँवा रे? कइसन भीड़"?

"मालिक, काल्हु जवन भिखमंगा दरवाजा प आइल रहे नू, जवना के खदेड़ि के भगा दिआइल, पोखरा के किनारे सिवाला वाला स्थान प मूअल परल बा। साइत भूख पियास से अइँठा के, छटपिटा के बेचारा राते मर गइल। एगो धरमी भाई आपन पुरान धोती से ओकर लास तोप देले बाड़न। जेकरा से जतना बनत बा, ओकर दाह-क्रिया खातिर आठ आना, एक रोपया, दू रोपया लोग धरम के नाँव प दे रहल बा"।

"एह में दुख आ अचरज के बात का बा? ई सभ होते रहेला। भगवान का ओर से केहू के अमीर, केहू के गरीब; केहू के दाता त केहू के भिखारी- बनाके इहाँ भेजल गइल बा। एह में हम तू का करबि? जेकरा जवन बिधि मउअत लिखल बा, होई। अच्छा सुन, हमार पाकिट से निकालि के तूहूँ दू गो रोपया भिखमंगा के दाह-संस्कार ला दे आव। तूं जानत बाड़े, हम धरम के काम में कबो चुकीं ना, पीछे ना रहीं।"

खदेरन दू रोपया लेके धरम के काम खातिर पोखरा प चलि गइल।

[सम्पर्क : प्रकाशपुरी, आरा (भोजपुर)]

www.bhojpurisahityangan.com

करनाटकी राजा आ उनकर सिमरौन गढ़

— लव शर्मा 'प्रशांत'

करनाटक के बहुते लमहर छेत्र पर यादव वंस के राजा रामदेव के सासन रहे। उनकर राजधानी देवगढ़ रहे। ई राज हर दिसाईं से सुखी आ सम्पन्न रहे। लेकिन एक समय ले दिल्ली पर मुहम्मद गोरी के कब्जा हो चुकल रहे आ दूगो सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक आ बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में ओकर फौज के साथ मोकाबला करे के सक्ति रामदेव के पास ना रहे। एक दिन ई फौज रामदेव के राज पर हमला क देलख। एह फौज से हार के राजा रामदेव के पाटलिपुत्र भाग के अपना जान के रक्छा करे के परल।

एक दिन पाटलिपुत्र में राजा रामदेव के मृत्यु हो गइल। रामदेव के बंसज नान्यदेव रहस। एह राज-परिवार के कुलदेवी तुलजा भवानी रहली। मुसलमानी फौज से हार के पाटलिपुत्र भागे के समय राजा रामदेव अपना साथे माँ तुलजा भवानी के मूर्तियों ले आइल रहस। राजा रामदेव के मृत्यु के बाद नान्यदेव माँ तुलजा भवानी के मूर्त्ति आ आपन बाकी परिवार के साथ नेपाल तराई का ओरि चल गइलन। विक्रम संवत् 1154 (सन् 1096 ई०) में नान्यदेव नेपाल के बारा जिला के साल्मलिवन में सिमरौन गढ़ के निर्मान कइलन। इनकर राज में नेपाल के तराई के कुछ भाग आ मिथिला रहे। सिमरौन गढ़ के सिंह द्वार पर संस्कृत में स्लोक अंकित बा जवन समय के थपेड़ा खा-खा के एतना मधिम हो गइल बा कि अब ओकरा के पढ़लो कठिन हो गइल बा। ऊ स्लोक एह तरेह बा -

"नवेन्दु विन्दु वियु सम्मित शाक वर्षे
तच्छावणे शितदले मुनि सिद्यतिथ्याम्
स्वाती शनैश्चरयुते करि वैरिलग्ने
तन्नान्यदेव नृपतिविदयीत्॥ वास्तुम॥"

एह स्लोक का मोताबिक साके 1019 सावन सुदी सप्तमी तिथि, सिदियोग, स्वाती नक्छत्र सनिवार के सिंहलग्न में राजा नान्यदेव वास्तुविधान कइलें)

नान्यदेव सिमरौन गढ़ राज्य के निर्मान कइसे कइलें? एकरा बारे में कवनो स्पस्ट जानकारी नइखे। लेकिन एकरा बारे में सिमरौन गढ़ का आस-पास का गाँवन में एगो किंवदन्ती प्रसिद्ध बा। लोग के कहनाम बा कि जब राजा नान्यदेव आपन बचल-खुचल थोरके फौज के साथे नेपाल तराई के साल्मलि वन में चहुँपलन त सैनिक नान्यदेव के सुतेला एगो लमहर गाँछि के ऊपर मचान बना देलन। गाँछि का नीचा जब सभे सैनिक नीन से आपन आँखि मून लेलन त मचान पर बइठल नान्यदेव तुलजा भवानी के मूरत हाथ में लेके धीरा-धीरा रोवे लगलन आ कहलन-

"माँ तुलजा भवानी! तोहरा रहते हमार वंस के राजपाट सभ खतम हो गइल आ आज हम सरनारथी अस जेने-तेने घूम रहल बानीं। लेकिन अबहूँओ तोहार कृपा हमरा पर नइखे होत! का हम एही तरेह जंगले-जंगले घूमते रह जाएब? अब अवरो केतना परीक्छा लेहबू?"

एह तरेह रोवत आ विलाप करत उनका नीन आ गइल आ तब उनका सपना में माँ तुलजा भवानी असीरबाद देत कहली-

"बेटा नान्य देव! तोहार भक्ति से हम बहुते खुस बानीं। जो, तोहरा के हम सिमरौन गढ़ के राज देत बानीं। तोहरा वंस के राज सातवाँ पुस्त ले रही आ एकरा लम्बाई नेपाल के तराई के एह भाग से लेके मिथिला तक रही।" कहल जाला कि माँ तुलजा भवानी के आदेस पर राते भर में यक्छ सभ सिमरौन गढ़, राजा के दरबार, मंदिर आ बहुते इनार तइयार क देलन। लेकिन इतिहासकार लेवी (LE'VI) के मोताबिक नान्यदेव राजा होखे से पहिले कवनो दोसर राजा के मंत्री भइल होखस आ बाद में अपना राजा के हटा के अपने राजा हो गइल होखस! जे होखे, नान्यदेव सिमरौन गढ़ के पहिलका करनाटकी राजा रहस। इनका राजा होते सिमरौन गढ़ पर करनाटक वंस के सासन सुरू हो गइल। इनका फौज में ब्रह्मपुत्र क्षत्रिय जाति के 'नयेर' लोगो रहस। करनाटक वंस के राजा परजा के बहुते सेवा करेवाला रहन। ई लोग के राज में परजा हर तरेह से सुखी रहन। एह राजन के सासन-काल में साहित्यो के बहुत उन्नति भइल। नान्यदेव का बाद गंगदेव, नरसिंह देव, रामसिंह देव, शक्ति सिंह आ भूपाल सिंह बारी-बारी से सिमरौन

www.bhojpurisahityangan.com

गढ़ पर राज कइलें। एही बीच सिमरौन गढ़ के सिवान के विस्तार भइल आ आर्थिक उन्नतियो बहुते भइल। ई राज एह अंचल के सबसे धनी राज में गिनाए लागल। साहित्यों के बहुते उन्नति भइल। राजा रामसिंह देव के राज्य-काल में कवि पृथ्वीधर आचार्य 'नृच्य कटिका' नाटक के टीका लिखले। रत्नेश्वर मिश्र' रत्न-दर्पण' आ श्रीकार 'व्याख्यामृत (अमरकोश टीका के प्रणयन कइलें।

सिमरौन गढ़ के आखिरी राजा हरि सिंह देव भइलें। उहाँ का सन् 1298 ई० में राज-सिंहासन पर बइठनीं। इनका सासन-काल में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ साहित्य के बहुते उन्नति भइल। राजा हरि सिंह देव साहित्य के उन्नति ला बहुते सहयोग कइलें। इनका दरबार में बहुते साहित्यकार आ विद्वान रहत रहलन। इनकर दरबारी साहित्यकार उमापति उपाध्याय संस्कृत मैथिली मिश्रित "किरतनिया" नाटक के प्रनयन कइलें। चंद्रेश्वर (क) "स्मृति रत्नाकर" (ख) "स्वामीवल्ल विवाद-तरंग" (ग) "आदि विधि" (घ) "शिववाकया वली" (ङ) "दान वाकयावली" (च) "कृत्य चिंतामणि" आ "कृत्य रत्नाकर" ग्रन्थन के रचना कइलें। "दान रत्नाकर" में चन्द्रेश्वर राजा हरिसिंह देव के म्लेच्छन से आक्रान्त धरती के उद्धार करेवाला आ "कर्नाटवंशोद्भव आ "कर्नाटाधिप शोद्भव" लिखले बाड़न। गुणेश्वर ठाकुर "सुगति सोपान", कविश्वर ज्योतिरीश्वर ठाकुर शेखराचार्य " धूर्त्त-समागम" (दू अंकन के), "पंचशायक" आ "वर्णरत्नाकर लिखलें। ज्योतिरीश्वर ठाकुर "धूर्त्त-समागम" में राजा हरिसिंह देव के "सुरत्राण" (सुलतान के पराजित करेवाला) के उपाधि देहलें। रघुदेव झा पंजी प्रबंध लिखलें। एह ग्रन्थन में कविश्वर ज्योतिरीश्वर ठाकुर के धूर्त्त-समागम अपना समय के श्रेष्ठ प्रहसन रहे। एकरा अलावें ऊपर लिखल दोसर किताबो स साहित्य के कसौटी पर बहुते दमगर बाड़ी स। दोसर बात ई बा कि ऊपर लिखल लेखक आ कवियन के भासा जन-साधारन के भासा ना होके संस्कृत रहे, तभहुँओ साहित्य के दृस्टिकोन से चंदेश्वर ठाकुर के "स्मृति रत्नाकर" बहुते सराहे लायक बा।

"धूर्त्त-समागम" संस्कृत के पहिलका प्रहसन ग्रन्थ हवे जवन आगे चल के खड़ी बोली में व्यंग प्रधान रचना के रास्ता प्रसस्त करउता। ज्योतिरीश्वर ठाकुर के "वर्ण रत्नाकर" गद्य के पृस्ठभूमि में रस से भरल प्रवृति के निरूपन करे के संदर्भ में विसिस्ट स्थान ग्रहन कर लेता।

भले एह ग्रन्थन के संरचना पूरा तरे से साहित्य सास्त्रीय पद्धति का आधार पर ना भइल रहे लेकिन प्रवाह-निरंतरता, रसोद्रक प्रवृत्ति, सब्द-विन्यास स्वरूप विधान, छंद योजना के दृस्टिकोन से उत्तरवर्त्ती साहित्य पर एह ग्रन्थन के यथेस्ट प्रवाह परल बा। इनका दरबार में मैथिल विद्वानन के बहुते आदर रहे। मैथिल जनता के बीच इनका प्रति एतना आदर रहे कि एक बेर सिमरौन गढ़ में रहेवाला मैथिली ब्राह्मनन का बीच जब जाति-सम्बन्धी झगरा उठल त विक्रम संवत् 1383 साल में राजा हरिसिंह देव सभ ब्राह्मनन के वंस के पञ्जिका बनवा के झगरा के खतम क देले रहस।

राजा हरिसिंह देव सांति का साथ सासन करते रहस कि तबे बंगाल में एगो अइसन घटना घट गइल जवन का कारन सिमरौन गढ़ के आज ले सांति का साथ बाँचल आजादी देखते-देखते खतम हो गइल। विक्रम संवत् 1382 साल में दिल्ली के सुलतान के अन्तर्गत बंगाल के सूबेदार दिल्ली सल्तनत का खेलाफ विद्रोह खड़ा क देलख। सुलतान सेना ले के बंगाल गएल आ बंगाल के फेर से कब्जा में क लेलख। बंगाल से लवटती बखत सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के पता चलल कि घन जंगल का पाछा धन-धान्य से सम्पन्न सिमरौन गढ़ के राज बा। ई खबर पाके सुलतान सिमरौन गढ़ पर हमला करे के फैसला कइलख। एह सम्बन्ध में एगो दोसरो कहानी मुसलमान इतिहासकार फिरिस्ता एह तरेह लिखले बाड़न - "कहल जाला कि जवना बखत सुलतान गयासुद्दीन तुगलक के सैनिक तिरहुत के पहाड़ी छेत्र के नजीक से चला जात रहन, ओतहीं के स्थानीय राजा सुलतान के सेना पर हमला क देले। लेकिन ऊ राजा बुरा तरेह से हार गइलन आ सुलतानी फौज ओह राजा के सेना के खदेड़े लागल। ऊ राजा जंगल के भीतर घुस गइलें। ओह घन जंगल में फौज के आगे बढ़ावल आसान ना रहे। एह से सुलतान खुद अपने घोड़ा से उतरल आ टाँगी से गांछी काटे लागल। सुलतान के खुदे गांछी काटत देख के

www.bhojpurisahityangan.com

फौज के हिम्मत बढ़ गइल आ पूरा फौज जवान गांछ काटे में भिर गइलन। कुछ दिन बाद गांछी काटत आ रास्ता बनावत फौज आखिर में एगो अइसन किला के आगे चहुँपल जवना के चारू ओरि पानी से भरल सात गो परिखा (खाई) आ एगो देवाले से ओके घेरल गइल रहे। तब सुलतान ओह किला के चारू ओरि के जगह के नीमन से जाँच कके सातो खाई के भरे के हुकूम देहलख। फौज खाई भरे में लाग गइल। खाई भरला का बाद ओह पहाड़ी देवालो के ढाह देहल गइल। एह काम में पूरा तीन हप्ता लाग गइल। एकरा बाद सुलतान अपना फौज के किला पर हमला करे के हुकूम दे देलस। बहुते भयानक लड़ाई भइल। महाराज हरिसिंह देव आपन हार नजीक देख के अपना परिवार आ कुछ सैनिकन का साथ पहाड़ पर चल गइलें। किला पर सुलतान के सेना कब्जा क लेलख। एकरा बाद सुलतान दिल्ली लवट गएल। एह बीच में हरिसिंह देव अपना राजगुरू प्रसिद्ध पण्डित कामेश्वर ठाकुर हिंया सुगना गांव गइले आ अपना हार के पूरा कहानी सुना के पूछलें- "अब कवना जगहा पर कलजुग में सनातन धर्म बाँचल रही आ गौ, ब्राह्मन के रक्छा होखी?"

कामेश्वर ठाकुर अपन हाथ उत्तर ओरी कर देहले। एकरा बाद हरिसिंह देव फेर ओही उत्तवारी पहाड़ पर चल गइलें।

सिमरौन गढ़ पर नव महिना ले सुलतान के फौज के कब्जा रहल। एह बीच में ओतही के गढ, देवालय आ महल के तूर-तार देलन आ एह में के धन लूट लेलन। आजो ओतही के मूर्त्तियन में कवनो के हाथ नइखे त कवनो के गोड़ नइखे, कवनो के कान नइखे त कवनो के नाक नइखे आ कवनो के मुड़िए नइखे त कवनो के देहे नइखे। एह तरेह से सिमरौन गढ़ के बिध्वंस सुलतानी सेना क देलख।

कुछ महीना ले महाराज हरिसिंह देव एह आस से ओह पहाड़ी पर डेरा डाल के बइठल रहलें कि कहीं दाव लागी त फेर से सिमरौन गढ़ पर कब्जा कर लेब लेकिन सुलतानी सेना गढ़ में जम के बइठ गइल रहे। लेकिन जब दिल्ली के सुलतान मिथिला के राज राजा हरिसिंह देव के मंत्री कामेश्वर ठाकुर के देके राजा बना देलन त एतहीं से मिथिला आ सिमरौन गढ़ पर सुगना वंस के कामेश्वर ठाकुर के कब्जा हो गइल। एकरा बाद महाराज हरिसिंह देव निरास हो गइलें आ माँ तुलजा भवानी के मूर्त्ति उठा के सन् 1324 के आखिर में पहाड़े-पहाड़े होत पनौती नगर चल गइलें। एह सम्बन्ध में नेपाली वंसावली में ई स्लोक लिखल बा-

बाणिब्धि युग्मशशि सम्मित शाक वर्षे,
पौषस्यशुक्ल नवमी रवि सुनुवारे।
त्यकत्वा स्वपट्टनपुरी हरिसिंहदेव
दुर्दैवदेवविपरीत गिरिं प्रवेश॥

एही सम्बंध में मिथिलो में एगो स्लोक प्रचलित बा, अइसन सुनाइल ह। ऊ स्लोक एह तरेह बा-

"वस्वब्धि बाहुशशि सम्मित शाक वर्षे
पौषस्यशुक्ल दशमी क्षितिसूनुवारे।
त्यकत्वा से पत्तनपुरी हरिसिंहदेवो
दुर्दैवदेशितपथो गिरिमाविवेश॥

एह तरह महाराज हरिसिंह देव नेपाल के पनौती नगर चल गइले। नेपाल उपत्यका में पहिलही तुलजा भवानी के प्रति बिसेस आदर रहे। हरिसिंह देव जब तुलजा भवानी के मूर्त्ति का साथ पनौती चहुँपलें त ओतही के पहाड़ी जनता उनकर बहुते स्वागत कइलख काहें कि माँ तुलजा भवानी के मूर्त्ति उनका साथ रहे आ दोसर कारन ई रहे कि दिल्ली के मुसलमान सुलतान उनका पर भयंकर हमला कर के उनकर सिमरौन गढ़ के राज छीन लेले रहे। हरिसिंह देव के पनौती चहुँपला का बाद नेपाल के राज परिवारो माँ तुलजा भवानी के आपन इस्ट-देवी मान लेलख आ उनकर बिसेस आदर करे लागल।

नेपाल से बाहर ई मान्यता बा कि सिमरौन गढ़ से हार के भगला का बाद ऊ नेपाल उपत्यका (काठमाण्डू) चल गइलें आ नेपाल उपत्यका के एगो राज भादगांव के जनता के सहयोग से उनका हाथ में आ गइल। लेकिन एह मान्यता में कवनों सच्चाई नइखे। वंसावली में हरिसिंह देव के बाद राजा होखेवालन के नांव आ ओह लोग के सासन अवधि के बरनन एह तरेह कइल गएल बा। (राइट० पृस्ठ-179-180)

हरिसिंह देव – 28 वर्ष
मतिसिंह देव – 15 वर्ष
शक्तिसिंह देव – 22 वर्ष
श्यामसिंह देव – 15 वर्ष

www.bhojpurisahityangan.com

वंसावली में मतिसिंह देव जेकरा के कहल गइल था ऊ इटम बहाल आ पशुपतिनाथ के शिलालेख के मदन राम हवें। लेकिन वंसावली में ओह लोग के नांव काहे असुद्ध लिखल था ओकरा सम्बन्ध में कुछो कहल मुस्किल था। पहिलका राजा हरिसिंह देव, तीसरका राजा शक्तिसिंह था, बीच के नांवो पहिलका आ दोसरका अस अनुकूल बनायेला तूरल गइल था, अइसने लागत था। हरिसिंह देव सन् 1326 ई० में नेपाल गइल रहस, ई बात प्रमानित हो चुकल था। एह हिसाब से एह लोगन के सासन 1326 से 1406 ई० तक होखे के चाहीं लेकिन एह अवधि में 1336 ई० से समूचे नेपाल में क्रमसः अरिमल्ल, राजमल्ल आ अर्जुन मल्ल वगैरह के 1380 इस्वी तक ले सासन रहे। एह कारन राजा हरिसिंह देव वंसजन के सासन नेपाल पर रहे, एह पर विस्वास ना कइल जा सकता। वेण्डाल आ कर्कपेट्रिक के वंसावलियन में हरिसिंह देव के वंसजन के नांव नइखे। नेपाल के हस्तलिखित ग्रन्थनों में एह लोग के कवनो चरचा नइखे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चम्पारण की साहित्य पृष्ठभूमि लेखक सच्चिदानन्द धूमकेतु
2. विशाल गोरखा राज्य का केही प्रसिद्ध राजाहरू (नेपाली)-ले० ललित धङ्ग सिजापति
3. नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास (नेपाली) सूर्यविक्रम ज्ञवाली
4. नेपालको ऐतिहासिक रूप-रेखा (नेपाली) लेखक- बालचन्द्र शर्मा
5. बब गंडक ने कहा- स्व० श्मेशचन्द्र झा
6. LE'VI-Le Nepal-Vol-11P.P. - 199tt
7. नेपालको इतिहास खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर, पटना

●

भोजपुरी साहित्य जगत में पं० जगन्नाथ मिश्र के नया धमाका 'पुरबी पुरोधा महेन्दर मिसिर'

छोट-छोट रचना भेजीं, अपनहूँ छपीं आ दोसरो के छपे दीं

—सम्पादक

कहानी

छोटकी दुलहिन

— सुशील कुमार शर्मा

घर के सभ मरद, मेहरारू आ लरिका, सयान ए बाति से खुस भइलन कि अब घर में एगो अऊरी नई नवेली दुलहिन आ जइहन तऽ घर में चारों ओर चहल-पहल कुछ दिन तक रही। रामधन के पाँच लइकन में दूसरा लरिका के बियाह होखे खातिर लगन रखा गइल। बड़का लरिका के मेहरारू घरहीं पर रहँसु बाकिर उनका से रामधन आ उनकर पत्नी खुस ना रहसु। एही से दूसरा लरिका के बियाह के तइयारी होखे लागल। लइकी के बाप लगन रखे अइलन तऽ अपना बेटी के गुन लच्छन बतावत कहलन-"हमार बेटी कवनों काम ना जानेले बाकिर अइसन लछिमी हऽ कि माटियो के छू देले तऽ सोना हो जाला।" ए बाति के सुनि के रामधन के घर के सब बेकति फूले ना समइले आ वो सुभ घड़ी के जल्दी आवे के राह देखे लागल लोग।

बियाह के दिन रखाइल। रामधन के घर में मंगल गीत के गवनइयो होखे लागल। टोला मुहल्ला ए खुसी में खूब उत्साह से सामिल भइल। दूर-दूर से रामधन के नाता रिस्तेदारी के लोग आवे लगलन। तब ले एक दिन लइकी के बाप आके कहलन कि एह समय हमार कुछ तंगी होखला से समान में कुछ चीज के जोगाड़ नइखी कऽ पावत एसे बियाह में जवन गाड़ी देवे के रहलीं हऽ ऊ गवना में दे देइब। एह बाति पऽ रामधन के कुछ बुरा लागल आऽ जाति समाज के मर्यादा देखि के ऊऽ जइसे-तइसे तइयार तऽ हो गइलन बाकिर रामधन के लरिका के मिजाज कुछ गरम रहे ऊ बिगरि गइल कि जब गाड़ी ना दे सकत रहलऽ तऽ काहें हमरा दुआरे अइलऽ? कहीं अऊर जगह अपना बेटी के बियाह कइले रहितऽ।

लइकी के बाप तऽ घाट-घाट के पानी पियले रहे। अपना होखे वाला दामाद के खिसियाये देवे ना चाहत रहे आ कवनो हिसाब से बियाह करा लेवे चाहत रहे। आखिर में गाड़ी देवे के तइयार भइल आ रामधन के लरिको अपना जिद पऽ अड़ि के मांग पूरा करवलस। बाकिर भविस्य के गरभ में का समाइल रहेला ई हम सभ आदमी ना जानि

www.bhojpurisahityangan.com

पाईला आ जब ओकर भोगे के समय आवेला तऽ किसिम-किसिम के कल्पना में आदमी अपना के उलझावेला।

रामधन ना समझ पवलन कि हमार होखे वाला समधी केतना धूर्त आ चालबाज बाऽ आ केतना एकर बेटी होई? समय बीतल आ ऊहो दिन आ गइल जब रामधन के बेटा के बरात खूब धूम-धाम से गइल। बाकिर जइसे कई दिन के भूखल पियासल लरिका मघा के अपना महतारी के गोद में जाला आ ओकरा के दूध चाहे कुछ खाये के ना देके खाली सादा पानी के गिलास मिले से जवन हाल होखे ठहे हाल आज रामधन के भइल जब बरात लेके अपना समधी के दुआरे पहुँचलन। ऊ दुआर जइसे बियाह के दुआर ना लागे अइसन लागे कि ऊहाँ कवनो गमी भइल बा आ रामधन अपना लरिका, गांव के लोगन के लेके गइल बाड़न। कहाँ से बराती लोग तरह-तरह के कल्पना में डूबल रहलन कि चलि के ससुरारी में बिजली के अंजोरे बइठि के गप्प मारल जाई आ किसिम-किसिम के मिठाई पकवान खाइल जाई आ कहाँ गइला पर दुआरे बिजली तऽ दूर एगो लालटेन तक ना जरल रहे। रामधन के बड़का लरिका आ कुछ देर खातिर दुलहो बिगड़ले आ अपना साथ में जवन पेट्रोमेक्स लेले रहलन लोग ठहे जरा के आ अपने इहां के तम्बू लगा के ओकरा भीतर बरातियन के बइठावल गइल।

रामधन आ उनकी घर के सब बेकतिन में मने-मने एह बाति के बड़ा दुख भइल कि कहाँ से कुपातर के इहाँ बियाह तय भइल बाकिर होनी के कवो केहू टाल सकल बाऽ? जइसे-तइसे खाना पीना कइके कुछ बराती तऽ ओहि रात अपना-अपना घरे आ गइलन आ कुछ लोग बिना कवनो मनोरंजन के राति बितवलन। हालांकि रामधन के समधी लगन रखावे के समय सब तइयारी अपना ओर से करे के कहले रहलन एही से रामधनो अपना ओर से कुछ ना कइलन।

बियाह भइल। बियाह के मंडप में दुलहो आपन खूब रोब देखवलस आ अपना घर परिवार के मर्यादा के आगे केहू के बाति सुने के तइयार ना रहे। कसहूँ ओकर सासु, ससुर, साली, सरहज आदर पियार से समझा के दुलहिन के ओकरा संगे भेजि दिहल।

जवना दिन से छोटकी दुलहिन रामधन के घर में अइली ओही दिन से घर के लोगन के बेवहार में बदलाव आवे लागल। जइसे कवनों संपेरा जड़ी आ मंतर से बड़-बड़ बिसधर के अपना बस में कर लेला ओइसहीं छोटकी दुलहिन के लगे कवनों जड़ी आ मंतर रहे जवना के ऊ अपना मरद, सासु, ससुर के अइसन सुंघवली, अइसन जादू मरली कि रामधन आ उनकर पत्नी के खातिर तऽ बस छोटकिये दुलहिन घर के संभाले के काबिल रहि गइली। अपना नई मेहरारू के घर में एतना इज्जत मिलला से उनकर लरिका के गोड़ तऽ धरती पऽ पड़बे ना करे। बाप महतारी तऽ बड़का लरिका पतोहि से पहिलहीं चिढ़े लागल रहे लोग अब तऽ दूसरको लरिका अपना भाई, भऊजाई, छोट भाई, बहिन सब में अवगुन देखे लगलन। अपना कोठरी से कबो बाहर ना निकलस आ अपना बाबुओ, महतारी के अपने कोठरी में दिन भर राखसु। अब घर के चार बेकति रामधन, उनकर पत्नी, बेटा, छोटकी दुलहिन ई लोग हरदम एके लगे मिलस लोग। रामधन के पत्नी तऽ छोटकी दुलहिन के अपना बेटी से ढेर सनेह करस। कबो-2 घर के केहू सदस्य छिप के कवनो बाति सुने तऽ मालूम होखे कि घर के ही बेकतिन के बुराई होखत रहे।

छोटकी दुलहिन तऽ पढ़े लिखे में एकदम गोबर गनेस रहली, चिट्ठी तक ना लिखे आवे बाकिर अपना आगे केहू के टिके ना देसू। हालांकि उनकर बाप बियाह के समय बतवले रहलन कि हमार बेटी इंटर पास हऽ बाकिर दुलहिन के चाल चलन, बात बेवहार आ रहन-सहन से ई ना लागे कि ऊ मिडिलो के मुंह ठीक से देखले होइहें।

कुछे दिन बीतल दुलहिन के भीतर उनका बाप के खून जौहर देखावे खातिर भड़के लागल। जइसे ऊ अपना घर से कसम खा के आइल होखे कि ए घर के तबाह,बरबाद कइ के छोड़ब। घर के एक-2 लोगन के बुराई करे सुरू कइली आ बात इहाँ तक आ गइल कि एक दिन अपना मरद पर बिगड़ि गइली आ कहली- तोहरा कहला से चुप बानीं नाहीं तऽ एक-2 लोगन के ठीक कइ के छोड़ब।

रामधन के एगो बड़ भाई रहलन। नांव रहे रामदरस। जइसन नांव ओइसने सोभाव। चाहे केहू कुछ कहि दे, बाकिर कुछ ना कहसु। जइसे सिधवा के मुंह कुकुर चाटे। एक दिन

www.bhojpurisahityangan.com

छोटकी दुलहिन अपना के चालाक सिद्ध करे के चक्कर में कवनों दवाई खा गइली आ ओ दवाई से उनकर तबियत खराब हो गइल। बाद में अपना मरद से कहली कि ऊ दवाई रामदरस से मांगि के खइली हँ, ओहि से तबियत खराब हो गइल हउ। रामधन के लरिका तउ अपना मेहरारू के पीछे पागल होई गइल रहे आ छोटकी दुलहिन खातिर रामदरस घर के आखिरी सदस्य रहलन जेकरा खिलाफ अपना मरद के तइयार कइल जरूरी रहे। जब उनकर आखिरी बान काम कउ गइल तब ऊ सोचली अपना मरद के साथ आपन अलग दुनिया बसावे के।

कुछ दिन अऊर बीतल आ दुलहिन के कुटिल करम से घर के लोगन में एतना तनाव आ कलह रहे लागल कि एक दिन रामधन मजबूर होके लरिका से कहलन कि बेटा तूं अपना परिवार के अपने साथ रखउ। काहें कि हमनीं के साथ ओकरा तकलीफ होत बा। बेटा तउ एही दिन के इन्तजार करत रहलन। बाप के बाति सुनते अपना पत्नी के लेके दूसरे दिन सहर में चलि गइलन जहाँ ऊ पहिले से रहत रहलन। कमात खात दूनो लोगन के जिनिगी खुसी से कटे लागल। बाकिर उनका ऊपर छोटकी दुलहिन के जड़ी मंतर मन के भीतर तक असर क देले रहे। उनकर धियान अब घर के ऊपर आ हिस्सेदारी में लागल आ कबे-2 अपना भाई से अपना हिस्सा के बातो करे लगलन।

ऊपर वाला के दरबार में नीमन आदमी के कमी रहेला। रामधन बड़ी सीधा सादा इनसान रहलन। दुनिया के फंद-फंद उनका ना आवे। उनकी कान में भनक तक ना पड़े कि उनकर दूसरका लरिका परिवार के बारे में केतना कुचाल सोचत रहत बाउ। अपना घर के बरबादी के सुरूआत करेवाला उनकर बेटा आ छोटकी दुलहिन के बेवहार से बेखबर रामधन अपना भाई के ऊपर अपना परिवार के भार सउंपि के एक दिन अचानक दुनिया के छोड़ि गइलन। भगवानो के ई बात ना ठीक लागल कि रामधन जइसन आदमी अपने औलाद के हाथे अपना सजावल घरौंदा उजड़त देखसु। बड़ भाई के रहते छोट भाई के अइसे गइला से रामदरस के दहिना हाथ कटि गइल।

अब परिवार के देख-रेख के कुल भार रामदरस के ऊपर आ गइल। बाकिर रामोदरस जइसे पूरा संस्कार में सज्जनता पवले रहलन आ कहीं ऊ रामधन से अधिके सीधा-सादा इनसान रहलन। बेटा के कुटिल चाल के उनहू के अंदाजा ना रहे। छोटकी दुलहिन आ बेटा मिलि के घड़ियाली लोर बहा के आपन बाति मनवावे में सफल रहसु लोग। ए नाटक के परिनाम ई भइल कि रामोदरस बड़का लरिका आ बड़की दुलहिन से चिढ़े लगलन। हालांकि बड़की दुलहिन खातिर उनका मन में हमेसा सहानुभूतियो रहे। बाकिर रामधन के ना रहला से छोटकी दुलहिन के ओर से उनका मन में कवनो सिकाइत ना रहे।

बाकिर आदमी के ऊपर लोभ आ सवारथ के भूत जब सवार हो जाला तउ फेर कवनो मंतर टोटका काम ना करे। रामदरस के धीरे-2 ई बात मालूम होखे लागल कि छोटका लरिका आ दुलहिन के मन के भीतर कवनो दूसर भाव बाउ बाकिर कइसे ई समस्या सुलझी एके सोचि-2 के परेसान रहे लगलन। लरिका आ छोटकी दुलहिन खातिर घर अब आपन घर ना रहे। सहर में रहे लगलन आ आपन हिस्सा कब कइसे मिली एकरा बारे में सोचे लगलन आ ए सब मामला में सलाह देवेवाला रहलन उनकर सासु-ससुर। ससुर अब बाप आ सासु महतारी हो गइली। अपना गांव आवसु तउ घंटा भर रूकसु आ ससुरारी में दू-चार दिन रूकि के तब सहर जासु। एक दिन बड़ भाई से अपना मन के बात निडर होके कहि दिहलन - 'हमार हिस्सा हमके दे दउ। हम तोहन लोगन के संगे ना रहब।' आजु छोटकी दुलहिन के मन के मुराद मिलल। ऊ ए परिवार के भीड़-भाड़ में ना रहल चाहत रहली। एही से ई नाटक रचली। उनकर बाप बियाह के समय ई बात साइत मन में बइठा के गइल रहलन कि ए परिवार के एकता चउ जवन गुमान बाउ ऊ हम तूरब। ऊ अपना मकसद में सफल हो गइलन। उनकर बेटी माटी के छू के भले सोना ना बनवली बाकिर हीरा जइसन परिवार के छू के जरूर माटी में मिला दिहली। सही कहल बा कि अगर औरत चाहे तउ झोपड़ी के स्वर्ग बना देई आ नाहीं तउ स्वर्ग जइसन खुसहाल घर के नरक कुंड बना के तउ छोड़ी।

●

[सम्पर्क : राजकीय उ० मा० बाल विद्यालय, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली-74]

www.bhojpurisahityangan.com

कविता

"जलऽता"

— धर्मेन्द्र कुमार पंडित

जेठ के दोपहरी में
सूरज के रोसनी से
हमार ई संसार जलऽता । 1 ।

एह घोर कलयुग में
इंसान के तरक्की देखि
इंसान, इंसान से जलऽता । 2 ।

चुनाव में आपन हार
दोसरा के जीत से
नेता, नेता से जलऽता । 3 ।

दहेज के मार से
बाप-भाई के सामने
बेटी-बहिन के चिता जलऽता । 4 ।

धरम के राजनीति से
नेतन के घटिया नीति से
इंसान के होली जलऽता । 5 ।

सासु-पतोहि के झगड़ा से
एके घर आंगन में
दू-तीन गो चुल्हा जलऽता । 6 ।

'आतंकवाद के सोर में
एटम बम के भय से
आदमी के खून जलऽता । 7 ।

●

[सम्पर्क : निरंजनपुर, सकला बाजार,
रोहतास (बिहार)]

कविता

मनवा पटुआइल

— तेज नारायण सिंह 'तरुण'

आसा के मंजर मुरझा गइल
मनवा पटुआइल।
फुनगी प फेंड़वा के
मकड़ी के जाला,
कइसे गूँथब अब
जिनिगी के माला?
भीतर सुगंधिया घुँआइल
मनवा पटुआइल।
सीतवा के रतिया
कुहरवा ले आइल
मनवा के अंकुरन प
पाला पराइल
फुटते किरिया लजा गइल।
मनवा पटुआइल।
कइसे भरब अब
जिनिगी के गगरी।
रेतवा भरल बा
दूर तक कगरी।
हाल हिरनी के हमरा ई हो गइल
मनवा पटुआइल।
केहू ना साथी
सहारा में रहिया,
काँट-कुस भरल,
ई टेंढ़ी डगरिया,
संझही के चंदा छुपा गइल,
मनवा पटुआइल।

●

[सम्पर्क : उच्च विद्यालय, पहरपुर,
बिहिया, पहरपुर, भोजपुर]

लघुकथा

अगुआ बनले पिछलगुआ

— डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा

देखऽ ए भाई, अब हमनीं के ना सहबि जा। ई लोग हमनीं के गजरा-मुरई का बूझि लेले बा कि जबे मन करी तबे उखाड़ के फेंकि दीही? हमनीं के छोट जाति के बानीं जा त का हमनीं के साहित्यकार नइखीं जा? हमनीं के कवना बाति में उनुका लोग से उनइस बानीं जा? ऊ लोग बड़का आ बाभन लोग के बिटोर क के हमनीं के दूम में पड़ल माछी लेखा निकालि के फेंकि दीहल।

त हमनीं के का करे के चाहीं? दोसर जाना पूछलें।

करे के का बा? हमनिंयो के एगो दोसर संस्था बनावल जाय आ एह में एको बड़ जाति के लोग ना रही। सर्वसम्मति से एगो दोसर संस्था बनि गइल। नांव रखाइल- 'भोजपुरी साहित्य विकास मंच'।

www.bhojpurisahityangan.com

पहिलका संस्था वाला लोग देखल कि मये क्रीम त छोटके जाति वाला संस्था में चलि गइल त ई लोग फोर-भांग करे के चालू कइल। सभसे पहिले सभसे बुजुर्ग साहित्यकार के अपना संस्था में एगो बढ़िया पद दे दीहल। एही तरी पद के लालच दे के सभ जाना के ई संस्था अपना में घींच लीहल। छोट जाति के बनावल संस्था कुछे दिन में बिखर के छितरा गइल।

बड़ जाति वाला संस्था के चलल अंग्रेज वाली नीति एह छोट जाति के साहित्यकारन के समुझ में ना आइल। पद के फेर में ई लोग थूक के चाटत अगुआ से पिछलगुआ बनि गइल।

●

[सम्पर्क : अनाईठ, आरा, भोजपुर (बिहार)]

कसौटी

वसुधैव कुटुम्बकम्

— डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा

प्रस्तुत पुस्तक मदन मोहन व्यास द्वारा लिखल गइल बा। लेखक आज के भारत के वर्तमान स्थिति से दुखित बा। भारत आजाद भइल बाकिर आजुओ एहिजा अंग्रेजन द्वारा स्थापित उपनिवेसवादी बेवस्था कायम बा। विनोबा भावे के कहनाम सोरहो आना साँच बुझाता कि भारत गुलाम गाँवन के देस ह। लेखक के विचार बा कि भारत चौखला गनराज्य के संघ बन जाय।

लेखक व्यक्ति के वैयक्तिक सोंच से ऊपर उठिके सामूहिक सोंच राखे के आह्वान करि रहल बा। जब तक आदमी अपना वैयक्तिक सोंच से ऊपर ना उठी तब तक समाज के भला ना होई।

पुस्तक छव गो भाग में विभक्त बा। पहिला भाग में कुछ सब्दन प लेखक टिप्पनी कइले बा। एक तरह से कहल जा सकत बा कि ऊ इन्हनीं के परिभासित कइले बा। एह में समुदाय-समाज, ज्ञान-अज्ञान, धर्म, यज्ञ, वर्न, सांति, योग वोगैरह के बारे में बतावल गइल बा।

दोसरका भाग के दूगो खंड 'क' आ 'ख' में बाँटल गइल बा। खंड- 'क' में दरसन संबंध ी जानकारी बा त खंड- 'ख' में उपनिसदन के बरनन आ महावाक्य, वेद, गायत्री मंत्र वोगैरह के बारे में जानकारी दीहल गइल बा।

भाग-3 में श्रीमद्भगवद्गीता में दीहल खास-खास स्लोकन के सारगर्भित परिचयात्मक बरनन बा। भाग - 4 में वेद, उपनिसद, पुरान वोगैरह से लीहल गइल सूक्तियन आ उद्धरनन के बरनन बा। भाग 5 में जैन आ बौद्ध मत के बारे में लिखल गइल बा। अन्तिम छठवाँ अध्याय में लेखक समाज के आधुनिक प्रारूप के रूप प्रस्तुत कइले बा। एकरा खातिर का करे के चाहीं? एकरा में लेखक 27 गो सुझाव देले बा।

ई पुस्तक आजाद भारत के वास्तविक रूप के प्रस्तुत करत बा। अगर लेखक द्वारा प्रस्तावित रूप प एहिजा के लोग अमल करे त भारत वास्तव में आजाद भारत बनि जाई। लेखक के कल्पना साकार होई तबन त होइबे करी भारतीय जनता के वास्तविक आजाद भारत में जीये के मोको मिली। लेखक के ई सपना तबे साँच होखी जब भारतीय जनता अपना व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठि के सामूहिक हित के सोंची आ लेखक के बतावल राहि प चले के प्रतिज्ञा कर ली।

पुस्तक - वसुधैव कुटुम्बकम्, लेखक- मदन मोहन व्यास, प्रकासक - अपना राज आन्दोलन, अजंता रोड, रतलाम, छपे के साल- सन् 2005 ई0, पृ0-56, मूल्य-25 रूपिया।

●

www.bhojpurisahityangan.com

मन-पाखी

— डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा

'गीत भोजपुरी' के रचयिता, हिन्दी-भोजपुरी के कई गो पुस्तक, पत्र-पत्रिकन के सम्पादक, हिन्दी आ भोजपुरी प एकाधिकार राखे वाला स्व0 डॉ0 राम सेवक 'विकल' द्वारा रचित 'मन-पाखी' भोजपुरी के काव्य संग्रह बा जवन कि उहाँ के परलोकवासी भइला के बाद उहाँ के सुपुत्र श्री आदित्य कुमार 'अंशु' के प्रयास आ आचार्य पाण्डेय कपिल के सम्पादन में छपल। एह संग्रह में कविता, गीत, गजल, बिरहा, दोहा, चौपाई, सोरठा, भजन, कजरी सभ के दरसन एके संगे हो जाता। एह रचनन में स्तरीयता के जवन रूप लउकत बा ऊ बहुते कम देखे के मिलेला।

मानव के सलाह देत कवि हरि-गुन-गान करे के कहि रहल बा। भाव कतना सुन्दर बा-

"बचपन बीतल खेलकूद में, यौवन रस में मद मातल,
अब नियराइल बाटे उमिरिया, सगरी अंग-अंग थाकल।
होई जनम सवारथ हो, करउ हरिगुन-गान।"

आदमी दुनिया के पचरा में अझुराइल रहेला। जब ऊ थाकि जाला त ओकरा भगवान के सिवा कवनों दोसर सहारा ना लउके- "करि दउ बेड़ा पार, साँवरिया,
अबकी बेरिया।"

आदमी के अन्तः में भगवान के बास बा, एह प कवि के उक्ति देखते बनत बा-"देहिये में राम बिराजेलन, मूरत गढ़ला से का होई? ....
हरि सुमिरन तू मनहीं में करउ, हल्ला कइला से का कोई?"

एह पुस्तक के कविता, गीत, गजल वोगैरह में जादेतर भक्तिपरक बा। कवि आपन भाव कागज के पन्नन प सरल भासा में उतारि देले बा। कवि के काव्य-कला उच्च कोटि के भइला के बादो अतना सरल बा कि ऊ साधारन से साधारन आदमी के दिमाग में आँटि जाई। भोजपुरी के खाँटी सब्दन के प्रयोग कवि के भोजपुरी में पैठ के सहज नमूना बा।

कवि के अपना काव्य-कला प इचिको गर्व नइखे, ओकरा मन में इचिको घमंड नइखे। तबे त कवि खुद कहि रहल बा-

"झटल-फूटल छन्द में, बने लागल कुछ गान।
उन्हनीं के संग्रह भइल, जीवन पथ के गान॥"

एह पुस्तक के बारे में कहल जा सकता बा कि ई भोजपुरी साहित्य खातिर एगो अमूल्य धरोहर बा।

पुस्तक-मन-पाखी, कवि- स्व0 डॉ0 रामसेवक 'विकल', प्रकासक- भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना, छपे के साल- सन् 2004 ई0, पृ0- 56, मूल्य-50 रूपिया।

पत्रिका पावती के खबर/प्रतिक्रिया भेजे में ओज मत करीं।

छपी पुस्तक/बुक पोस्ट

नियम - 121

सेवा में,

....

....

....

प्रेषक :
डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष-भोजपुरी अनुसंधान संस्थान
मुहल्ला+डाकघर-अनाईठ (आरा)
(प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)
जिला - भोजपुर (बिहार) 802301